



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 25]

नई दिल्ली, सोमवार, जनवरी 19, 2009/पौष 29, 1930

No. 25]

NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 19, 2009/PAUSA 29, 1930

कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 19 जनवरी, 2009

स.का.नि. 35(अ).— केन्द्रीय सरकार, कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 605क के साथ पठित धारा 642 की उपधारा (1) खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कंपनी (भारतीय निक्षेपागार रसीदों का निर्गमन) नियम, 2004 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :-

- (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम कंपनी (भारतीय निक्षेपागार रसीदों का निर्गमन) (संशोधन) नियम, 2009 है।  
(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।
- कंपनी (भारतीय निक्षेपागार रसीदों का निर्गमन) नियम, 2004 में, जिसे इसमें इसके पश्चात् मूल नियम कहा गया है, नियम 3 के उपनियम (i),-  
(क) खंड (ख) को लोप किया जाएगा और खंड (ग) से खंड (ज) को क्रमशः खंड (ख) से खंड (छ) के रूप में पुनःसंख्यांकित किया जाएगा।  
(ख) पुनःसंख्यांकित खंड (च) के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :-

“ (च) विदेशी अभिरक्षक बैंक” से ऐसी बैंककारी कंपनी अभिप्रेत है जो भारत के बाहर किसी देश में स्थापित है और जो निर्गमन करने वाली कंपनी के उन साधारण शेयरों के लिए

अभिरक्षक के रूप में कार्य करती है जिनके विरुद्ध घरेलू निक्षेपक के साथ कोई अभिरक्षक ठहराव या करार है या भारत में ऐसा कारबार करने के लिए किसी स्थान की स्थापना करके आईडीआर निर्गमित करने का प्रस्ताव है ।” ।

3. मूल नियमों के नियम 5 में,—

- (क) उपनियम (1) के खंड (ii) में ‘या प्रारूप प्रस्थापना पत्र’ शब्दों का लोप किया जाएगा ।
- (ख) उपनियम (1) के खंड (iii) के परंतुक में ‘या प्रस्थापना पत्र’ शब्दों का, जहां-जहां आते हैं, लोप किया जाएगा ।
- (ग) उपनियम (1) के खंड (iv) में ; ‘या प्रस्थापना पत्र’ शब्दों का लोप किया जाएगा ।
- (घ) उपनियम (2) के खंड (vi) में, ‘या यथास्थिति प्रस्थापना पत्र’ शब्दों का लोप किया जाएगा ।
- (ङ) उपनियम (2) के खंड (vi) के परंतुक में, ‘या प्रस्थापना पत्र’ शब्दों का लोप किया जाएगा ।

4. मूल नियमों के नियम 6 में—

- (क) उपनियम (ii) का लोप किया जाएगा ;
- (ख) उपनियम (iii) और उपनियम (iv) को क्रमशः उपनियम (ii) और उपनियम (iii) के रूप में पुनःसंख्यांकित किया जाएगा ।

5. मूल नियमों के नियम 7 के उपनियम (ii) में, “नियम 5 के खंड (ii) के अधीन” शब्दों, अंकों और कोष्ठकों के स्थान पर “नियम 5 के उपनियम (2) के खंड (vi) के अधीन” शब्द, अंक और कोष्ठक रखे जाएंगे ।

6. मूल नियमों के नियम 9 में,

- (क) “नियम 5 के खंड (iii) में” शब्दों, अंकों और कोष्ठक के स्थान पर “नियम 5 के उपनियम (2) के खंड (iv) में” शब्द, अंक और कोष्ठक रखे जाएंगे ।

- (ख) निम्नलिखित परंतुक जोड़ा जाएगा :-

“परंतु किसी निर्गमन करने वाली कंपनी द्वारा निर्गमित आईडीआर भारत में निवासी व्यक्ति से भिन्न किसी व्यक्ति द्वारा क्रय, धारित या अंतरित किए जा सकेंगे यदि ऐसी निर्गमन करने वाली कंपनी इस संबंध में भारतीय रिजर्व बैंक से विशिष्ट अनुमोदन अभिप्राप्त करती है या किसी ऐसी नीति या मार्गदर्शक सिद्धांतों का अनुपालन करती है जो इस विषयवस्तु पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए जाएं । ” ।

7. मूल नियमों के नियम 10 में,—

- (क) उपनियम (i) में “कोई निवासी” शब्दों का लोप किया जाएगा;
- (ख) उपनियम (ii) में “भारतीय निवासी” शब्दों के स्थान पर, जहां-जहां आते हैं “आईडीआर के धारक” शब्द रखे जाएंगे।

8. मूल नियमों के नियम 11 में उपनियम (i) और उपनियम (ii) के स्थान पर निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात् :-

“ प्रत्येक निर्गमन करने वाली कंपनी ऐसी निरंतर प्रकटन अपेक्षाओं का पालन करेगी जो इस संबंध में सेबी द्वारा विनिर्दिष्ट की जाएं।”

9. मूल नियमों की अनुसूची के पैरा (6) में,—

- (क) उपपैरा (i) और उपपैरा (ii) के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—

“(i) जहां किसी देश की विधि, जिसमें निर्गमन करने वाली कंपनी निगमित है, निर्गमन करने वाली कंपनी के लेखाओं की वार्षिक कानूनी संपरीक्षा अपेक्षित है, वहां निर्गमन करने वाली कंपनी के कानूनी संपरीक्षक द्वारा एक रिपोर्ट ऐसे प्रारूप में होगी जो सेबी द्वारा विहित की जाए—

- (क) प्रास्पेक्टस की तारीख से ठीक पूर्व के तीन वित्तीय वर्षों की बाबत निर्गमन करने वाली कंपनी का संपरीक्षित वित्तीय विवरण और वित्तीय प्रास्थिति ; और

- (ख) उस अवधि की अंतिम तारीख जिसके लिए अद्यतन संपरीक्षित वित्तीय विवरण तैयार किए गए हैं और प्रास्पेक्टस की तारीख से बीच की अवधि के लिए कंपनी की वित्तीय प्रास्थिति।

परंतु ऐसे निर्गमन करने वाली कंपनी की दशा में जो भारत से बाहर निगमित विदेशी बैंक है और जिसको सेंट्रल बैंक द्वारा विनियमित किया जाता है जो उसके बदले अंतरराष्ट्रीय निपटारे के लिए बैंक का सदस्य है, उस अवधि की अंतिम तारीख से प्रारंभ होने वाली अवधि के संबंध में जिसके लिए अद्यतन संपरीक्षित वित्तीय विवरण तैयार किए गए हैं और प्रास्पेक्टस की तारीख की बाबत इस पैरा के अधीन अपेक्षाओं का समाधान किया जाएगा यदि सुसंगत वित्तीय विवरण ऐसे कानूनी संपरीक्षक की सीमित पुनर्विलोकन रिपोर्ट के आधार हैं।

- (ii) जहां किसी देश की विधि, जिसमें निर्गमन करने वाली कंपनी निगमित है, वहां निर्गमन करने वाली कंपनी के लेखाओं की वार्षिक कानूनी संपरीक्षा अपेक्षित नहीं है एक रिपोर्ट ऐसे

प्ररूप में, जो सेबी द्वारा विहित की जाए, चार्टर्ड अकाउंटेंट अधिनियम, 1949 के निबंधनों और अर्थातर्गत किसी व्यवसायरत चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा निम्नलिखित को सत्यापित किया जाएगा -

(क) विशिष्टतया प्रास्पेक्टस की तारीख से ठीक पूर्ववर्ती तीन वित्तीय वर्षों में से प्रत्येक के लिए लाभ और हानि निर्गमन करने वाली कंपनी के वित्तीय कार्य, और निर्गमन करने वाली कंपनी की आस्तियों और दायित्वों के ऊपर के संबंध में ; और

(ख) उस अवधि की अंतिम तारीख जिसके लिए अद्यतन वित्तीय विवरण तैयार किए गए हैं और प्रास्पेक्टस की तारीख की बीच की अवधि के लिए कंपनी की वित्तीय प्रास्थिति ।

(iii) इस पैरा के उपपैरा (i) और उपपैरा (ii) दोनों की दशा में, निर्गम आरंभ करने की तारीख और उक्त उपपैराओं के अधीन रिपोर्टों की तारीख के बीच का अंतर 120 दिन से अधिक नहीं होगा ।”

(ख) उपपैरा (iii) को उपपैरा (iv) के रूप में पुनःसंख्यांकित किया जाएगा और पुनःसंख्यांकित उपपैरा (iv) के खंड (ख) के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :-

“ (ख) यथास्थिति, उपपैरा (i) और उपपैरा (ii) में कथित रिपोर्टें ऐसे निगमित निकाय (निकायों) के संबंध में भी ।”

[फा. सं. 1/2/2001-सीएल.-V]

जितेश खोसला, संयुक्त सचिव

टिप्पण : मूल नियम में सा.का.नि. 131(अ) तारीख 23.02.2004 द्वारा प्रकाशित किए गए और सा.का.नि. सं. 480(अ) तारीख 11.07.2007 द्वारा संशोधित किए गए ।

**MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS**  
**NOTIFICATION**

New Delhi, the 19th January, 2009

**G.S.R. 35(E).**— In exercise of powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of section 642 read with section 605A of the Companies Act, 1956, the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Companies (Issue of Indian Depository Receipts) Rules, 2004, namely:-

1. (1) These Rules may be called the Companies (Issue of Indian Depository Receipts) (Amendment) Rules, 2009.  
(2) They shall come into force from the date of their publication in the Official Gazette.
2. In the Companies (Issue of Indian Depository Receipts) Rules, 2004, hereinafter referred to as the principal rules, in rule 3, in sub-rule (i), -
  - (A) clause (b) shall be deleted and clauses (c) to (h) shall be renumbered as clauses (b) to (g) respectively.
  - (B) for the renumbered clause (f), the following shall be substituted, namely:-

“(f) Overseas Custodian Bank” means a banking company which is established in a country outside India and which acts as custodian for the equity shares of Issuing Company, against which IDRs are proposed to be issued by having a custodial arrangement or agreement with the Domestic Depository or by establishing a place of business in India.”.
3. In the principal rules, in rule 5, -
  - (a) in sub-rule (1), in clause (ii), the words ‘or draft letter of offer’ shall be omitted;
  - (b) in sub-rule (1), in the proviso to clause (iii), the words ‘or letter of offer’ wherever occurring shall be omitted;

- (c) in sub-rule (1), in clause (iv), the words 'or letter of offer' shall be omitted;
- (d) in sub-rule (2), in clause (vi), the words 'or letter of offer, as the case may be,' shall be omitted;
- (e) in sub-rule (2), in proviso to clause (vi), the words 'or letter of offer' shall be omitted.
4. In the principal rules, in rule 6 -
- (a) sub-rule (ii) shall be deleted;
  - (b) sub-rule (iii) and sub-rule (iv) shall be renumbered as sub-rule (ii) and sub-rule (iii) respectively.
5. In the principal rules, in rule 7, in sub-rule (ii), for the words, figures and bracket "under clause (ii) of rule 5", the words, figures and bracket "under clause (vi) of sub-rule (2) of rule 5" shall be substituted.
6. In the principal rules, in rule 9,-
- (a) for the words, figures and bracket "in clause (iii) of rule 5", the words, figures and bracket "in clause (iv) of sub-rule (2) of rule 5" shall be substituted;
  - (b) the following proviso shall be added:-  
  
"Provided that the IDRs issued by an issuing company may be purchased, possessed and transferred by a person other than a person resident in India if such Issuing Company obtains specific approval from Reserve Bank of India in this regard or complies with any policy or guidelines that may be issued by RBI on the subject matter."
7. In the principal rules, in rule 10,-
- (a) in sub-rule (i), the word "resident" shall be omitted;
  - (b) in sub-rule (ii), for the words "Indian resident" wherever occurring, the words "holder of IDRs" shall be substituted.
8. In the principal rules, in rule 11, for sub-rules (i) and (ii), the following rule shall be substituted, namely:-

“Every issuing company shall comply with such continuous disclosure requirements as may be specified by SEBI in this regard.”.

9. In the principal rules, in the Schedule, in para 6, -

(a) for the sub-paragraphs (i) and (ii), the following shall be substituted, namely:-

“(i) Where the law of a country, in which the Issuing company is incorporated, requires annual statutory audit of the accounts of the Issuing company, a report by the statutory auditor of the Issuing company, in such form as may be prescribed by SEBI on -

(A) the audited financial statements and financial status of the Issuing Company in respect of three financial years immediately preceding the date of prospectus, and

(B) the financial status of the company for the period between the last date of the period for which latest audited financial statements are made and the date of prospectus:

Provided that in case of an Issuing Company which is a foreign bank incorporated outside India and which is regulated by a Central Bank which, in turn, is a member of Bank for International Settlements, the requirement under this paragraph, in respect of period beginning with last date of period for which the latest audited financial statements are made and the date of prospectus shall be satisfied, if the relevant financial statements are based on limited review report of such statutory auditor.

(ii) Where the law of the country, in which the Issuing company is incorporated, does not require annual statutory audit of the accounts of the Issuing company, a report, in such form as may be specified by SEBI, certified by a Chartered Accountant in practice within the terms and meaning of the Chartered Accountant Act, 1949 on -

- (A) the financial affairs of the Issuing Company, in particular on the profits and losses for each of the three financial years immediately preceding the date of prospectus and upon the assets and liabilities of the Issuing Company and
- (B) the financial status of the company for the period between the last date of the period for which the latest financial statements are made and the date of prospectus.

(iii) In case of both sub-paragraphs (i) and (ii) of this paragraph, the gap between date of opening of issue and date of reports under the said sub-paragraphs shall not exceed 120 days.”.

(b) the sub-paragraph (iii) shall be re-numbered as sub-paragraph (iv) and for clause (b) of renumbered sub-paragraph (iv), the following shall be substituted, namely:-

“(b) The reports stated in sub-paragraphs (i) and (ii), as the case may be, in respect of such body(ies) corporate also.”.

[F.No. 1/2/2001-CL.-V]

JITESH KHOSLA, Jt. Secy.

**NOTE:** The principal rules were published vide G.S.R. 131(E) dated 23.02.2004 and amended vide GSR 480(E) dated 11.07.2007.